इस्लाम और सन्यास

- अख़िरत की मुक्ति और कल्याण के सम्बन्ध में धर्मों का सामान्य मत है कि वह संसार से विमुख होकर पूर्णता एकांत ग्रहण कर लिया जाऐ और दुनिया के समस्त आस्वादनों और कामनाओं से अपने आप को मुक्त करके जंगलों, पहाड़ो और गुफाओं में जीवन व्यतीत किया जाये।
- भारतीय धर्मों और जैन धर्म की मान्यता भी यही है।
- इसी प्रकार बौद्ध धर्म की दृष्टि में भी पारलौकिक मोक्ष और सफलता के लिए आवश्यक है कि संसार और संसार की समस्त चीज़ों से मनुष्य अपने संबंध तोड़े, इसीलिए धर्म और संस्थापक महात्मा बुद्ध ने अपने माता–पिता, पतनी और संतान और राजपाठ को त्याग कर संयास ग्रहण कर लिया और इसी को मुक्ति का साधन ठहराया।
- स्वयं हिन्दू धर्म में जीवन–यात्रा की जिन मंजिलों का उल्लेख मिलता है, उनमें पहली मंज़िल ज्ञान–अर्जन की है, दूसरी गृहस्थी और उसके बाद बानप्रस्थ की मंजिल आती है और अन्त में वह मंजिल आती है, जबकि मनुष्य पूर्णरूप से संन्यस्थ हो जाता है। मनुस्मृति में है कि जब गृहस्थ के सिर के बाल सफेद हो जायें और त्वचा में झुर्रिंया दिखाई देने लगे और उसका बेटा पुत्रवान हो जाये, उस समय उसे चाहिए कि वह वन में निवास ग्रहण करे और हर प्रकार के नगर–आहार और वस्त्रादि और सभी उत्कृष्ट पदार्थों को छोड़ दें और अपनी पत्नी को अपने पुत्रों के पास छोड़ दे या फिर उसकी पत्नी भी उस के साथ जंगल में त्याग का जीवन बिताये, लेकिन यह वानप्रस्थ आश्रम में है।
- इस्लाम की दृष्टि में संसार–त्याग और सन्यास सत्य धर्म के प्रतिकूल भी है और दुनिया में बिगाड और फसाद का कारण भी बनता है इसलिए कुरआन मज़ीद में ईसाइयों के यहॉ प्रचलित संयास का खंडन करते हए उसे अस्वाभाविक और अप्रशंसनीय तरीका बताया गया है। कुरआन में है– और निश्चय ही हमने नूर ओर इब्राहीम को रसूल बना कर भेजा और उनकी सन्तति में नुबूवत और किताब रखी, तो कुछ तो उनमें से राह पर रहे, और उनमें बहुत से सीमोल्लंघन करने वाले हैं। फिर उन (रसूलों) के पद चिन्हों पर हम अपने और रसूल भेजते रहे, फिर मरयन के पुत्र ईसा को भेजा और हमने उसे इन्जील (Bible) प्रदान की, और जो लोग उसके पीछे चले, उनके दिलों में हमने करूणा और दयालुता रख दी, और संसार–त्याग (बैराग्य) की प्रथा उन्होने स्वयं निकाली, हमने उन्हें इसका आदेश नहीं दिया था, दिया था तो

बस अल्लाह की प्रसन्नता चाहने का , तो इन्होने उसका जैसा पालन करना चाहिये था, नहीं किया। तो उनमें से जो ईमान लाये थे, उन्हें हमने उसका बदला दिया और उनमें बहुत से सीमोल्लंघन करने वाले हैं।

(सूर : हदीद– 26:27)

इस आयत में रहबानियत का शब्द आया है।

रहबनियत का अर्थ है डरे रहने का रास्ता और रहबनियत के मायने है डरे हुए लोगों का पथ । परिभाषा में इससे मुराद है किसी व्यक्ति का डर के कारण (चाहे वह किसी के अत्याचार का भय हो, या दुनिया के उपद्रवों का भय या अपने मन की कमजोरियों का भय) दुनिया छोड़ देना और सांसारिक जीवन से भाग कर जंगलों और पहाड़ों में पनाह लेना या सबसे कट कर एकान्त में जा बैठना।

नबी (सल्ल0) ने फरमाई है, इस्लाम में कोई सन्यास नहीं। (मुसनद अहमद) एक और हदीस में हुजूर (सल्ल0) ने फरमाया, इस उम्मत का सन्यास अल्लाह के रास्ते में जिहाद है (मुसनद अहमद, मुसनद अबी याला) अर्थात इस उम्मत केलिए आध्यात्मिक उन्नति का रास्ता यह नहीं है कि आदमी संसार त्याग दे बल्कि यह है कि आदमी अल्लाह के रास्त में जिहाद करे और उम्मत उपद्रवों से डर कर जंगलों और पहाड़ों की तरफ नहीं भगती, बल्कि अल्ला की राह में जिहाद करके उसका मुकाबला करती है। बुख़ारी और मुस्लिम दोनों ने रिवायत की है कि साहबा में से एक साहब ने कहा, मैं सदैव पूरी रात नमा़ज पढ़ा करूँगा। दूसरे ने कहा, मैं हमेशा रोज़ा रखूँगा और कभी नागा न करूँगा। तीसरे ने कहा, मैं कभी शादी न करूँगा और औरत से सम्बन्ध न रखूंगा। अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने ये बातें सुनी तो फरमाया, '' अल्लाह की कसम ! मैं तुम से अधिक अल्लाह से डरता और उसकी अवज्ञा से बचता हूँ, परन्तु मेरा तरीका यह है कि रोज़ा रखता भी हूँ और नहीं भी रखता, रातों को नमाज़ भी पढ़ता हूँ और औरतों से शादी भी करता हूँ। जिसको मेरा तरीका पसन्द न हो उसका मुझ से कोई सम्बन्ध नहीं। हज़रत अनस (रजि0) कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल0) फरमाया करते थे, अपने ऊपर सख़्ती न करो कि अल्लाह तुम पर सख़्ती करे, एक गिरोह ने यही सख़्ती अपनाई थी तो अल्लाह ने भी उसे सख्त पकड़ा। देख लो उनके वे अवशेष सन्यास ग्रहों और गिरजा घरो में मौजूद हैं। –– अबू दाऊद